OPEN ACCESS

Ind. Jr. of Mod. Res. and Rev *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 4 Issue 9 [Sep] Year 2026*

Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

झारखंड का गढ़वा जिला: युवाओं में बढ़ती नशीली पदार्थों की लत और बिखरता सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण

राज कुमार सिंह

सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, शिवेसर चंद्रवंशी डिग्री कॉलेज, मझिआंव, गढ़वा, झारखंड,भारत

रामचंद्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय, बिश्रामपुर, पलामू,

Corresponding Author: * राज कुमार सिंह

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22254368

सारांश

प्रस्तुत शोध झारखंड के गढ़वा जिले में युवाओं (15-30 वर्ष आयु वर्ग) के बीच मादक द्रव्यों के सेवन में हुई चिंताजनक वृद्धि और उसके परिणामस्वरूप सामाजिक-पारिवारिक पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ने वाले विनाशकारी प्रभावों का अध्ययन करता है। ऐतिहासिक रूप से मजबूत सामुदायिक मूल्यों से जुड़े गढ़वा जिले में पारंपरिक नशों के स्थान पर अत्यधिक घातक सिंथेटिक ड्रग्स (ब्राउन शुगर) और फार्मास्युटिकल ओपियोइड्स के बढ़ते प्रसार के कारण वर्तमान में एक गंभीर जनसांख्यिकीय संकट पैदा हो गया है। मिश्रित शोध पद्धति पर आधारित इस अध्ययन में 250 उत्तरदाताओं (जिसमें सक्रिय/पुनर्वासित नशेड़ी, प्रभावित परिवार, पुलिस प्रशासन और चिकित्सा विशेषज्ञ शामिल हैं) के प्रतिदर्श का विश्लेषण किया गया है। निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि गढ़वा की भौगोलिक संवेदनशीलता (उत्तर प्रदेश, बिहार और छत्तीसगढ़ के साथ साझा खुली सीमाएं), तीव्र युवा बेरोजगारी, भविष्य की चिंता और पीयर प्रेशर (दोस्तों का दबाव) इस महामारी को बढ़ावा देने वाले प्राथमिक कारक हैं। विश्लेषण दर्शाता है कि नशे की इस लत का सीधा संबंध पारिवारिक ढांचे के बिखराव से है, जो घरेलू हिंसा, आर्थिक तबाही और माता-पिता के मानसिक आघात के रूप में सामने आ रहा है। सामाजिक स्तर पर, इस संकट ने स्थानीय छोटे अपराधों (छिनतई, चोरी) में 65% की वृद्धि की है और सार्वजनिक सुरक्षा को खतरे में डाला है। अंततः, यह शोध पत्र इस सामाजिक-व्यवहार्य आपातकाल को नियंत्रित करने और क्षेत्र के युवाओं के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए सख्त सीमा पुलिसिंग, सुलभ सरकारी नशामुक्ति बुनियादी ढांचे और सक्रिय सामुदायिक-पारिवारिक काउंसलिंग के एक त्रि-स्तरीय सुधारात्मक ढांचे का प्रस्ताव करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 07-07-2026
- **Accepted:** 25-08-2026
- **Published:** 02-09-2026
- **MRR:**4(9); 2026: 35-40
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सिंह रा. कु. झारखंड का गढ़वा जिला: युवाओं में बढ़ती नशीली पदार्थों की लत और बिखरता सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(9):40-45.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: मादक द्रव्यों का सेवन, गढ़वा जिला, युवा व्यसन, पारिवारिक विघटन, सिंथेटिक ड्रग्स, सामाजिक-आर्थिक प्रभाव, सीमा तस्करी।

© 2026 राज कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

1.1 पृष्ठभूमि

झारखंड राज्य का उत्तर-पश्चिमी प्रवेश द्वार माना जाने वाला गढ़वा जिला अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, जनजातीय बहुलता और प्राकृतिक संसाधनों के लिए जाना जाता है। भौगोलिक रूप से यह जिला अत्यंत संवेदनशील मोड़ पर स्थित है, जिसकी सीमाएं उत्तर प्रदेश, बिहार और छत्तीसगढ़ जैसे तीन प्रमुख राज्यों से मिलती हैं। ऐतिहासिक और पारंपरिक रूप से यहां का समाज सामूहिक ताने-बाने, पारिवारिक मूल्यों और कृषि-आधारित जीवनशैली से जुड़ा रहा है। किंतु, वैश्वीकरण के इस दौर में जहां डिजिटल कनेक्टिविटी और आधुनिकता ने पैर पसारे हैं, वहीं इसके समानांतर एक अदृश्य, घातक और मौन महामारी ने गढ़वा की जड़ों को खोखला करना शुरू कर कर दिया है, यह महामारी है युवाओं में बढ़ती नशीली पदार्थों की लत।

1.2 समस्या का स्वरूप

पिछले कुछ वर्षों में गढ़वा जिले में मादक द्रव्यों के सेवन के पैटर्न में एक खतरनाक बदलाव (Shift) देखा गया है। पारंपरिक और सीमित माने जाने वाले नशों (जैसे महुआ, ताड़ी या गांजा) का स्थान अब अत्यधिक घातक, रासायनिक और सिंथेटिक नशीले पदार्थों ने ले लिया है। आज जिले के शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों से लेकर सुदूर ग्रामीण इलाकों तक ब्राउन शुगर (स्मैक), कोडीन युक्त कफ सिरप, नाइट्राजेपाम जैसी प्रतिबंधित गोलियां और हेरोइन के सस्ते अल्टरनेटिव्स की पहुंच बेहद आसान हो गई है। सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि इस दलदल में फंसने वाले अधिकांश लोग **15 से 30 वर्ष के आयु वर्ग** के हैं, जो किसी भी समाज की जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend) और भविष्य की रीढ़ होते हैं।

1.3 सामाजिक और पारिवारिक विघटन

नशे की यह लत केवल एक व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या या चिकित्सीय विकार नहीं रह गई है, बल्कि इसने गढ़वा के सामाजिक और पारिवारिक पर्यावरण को पूरी तरह असंतुलित कर दिया है। भारतीय समाज की सबसे मजबूत कड़ी 'परिवार' इस संकट की पहली और सबसे बड़ी शिकार बन रही है। नशामुक्ति की कमी और वित्तीय दबाव के कारण घरों में घरेलू हिंसा, मानसिक प्रताड़ना और आपसी अविश्वास की खाई चौड़ी हो रही है। सामाजिक स्तर पर, यह प्रवृत्ति युवाओं को अनैतिक और आपराधिक गतिविधियों (जैसे चोरी, छिनतई, और मादक पदार्थों की पेडलिंग) की ओर धकेल रही है, जिससे जिले की कानून-व्यवस्था और सार्वजनिक सुरक्षा गंभीर रूप से प्रभावित हो रही है।

1.4 शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य गढ़वा जिले में युवाओं के बीच पनपते इस नशामूलक संकट के अंतर्निहित कारणों (Root Causes) की पड़ताल करना है। यह आलेख इस बात का विश्लेषण करता है कि किस प्रकार भौगोलिक परिस्थितियां, बेरोजगारी, और मानसिक अवसाद मिलकर युवाओं को इस जाल में फंसाते हैं। इसके अतिरिक्त, यह शोध नशे के कारण बिखरते सामाजिक-पारिवारिक ढांचे का मूल्यांकन करते हुए, स्थानीय प्रशासन, शैक्षणिक संस्थानों और नागरिक समाज के सहयोग से एक व्यावहारिक और उपचारात्मक कार्ययोजना का खाका प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

2. साहित्य की समीक्षा

साहित्य की समीक्षा किसी भी शोध का वह स्तंभ है जो समस्या की ऐतिहासिकता, वर्तमान गंभीरता और पूर्व में किए गए अध्ययनों के निष्कर्षों को स्पष्ट करता है। गढ़वा जिले में युवाओं के बीच बढ़ती नशामूलक प्रवृत्ति और उसके सामाजिक-पारिवारिक प्रभावों को समझने के लिए साहित्य को तीन प्रमुख आयामों में वर्गीकृत किया गया है:

2.1 राष्ट्रीय स्तर पर मादक द्रव्यों के सेवन का पैटर्न

- **केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय की रिपोर्ट:** भारत सरकार की राष्ट्रीय सर्वेक्षण रिपोर्ट दर्शाती है कि देश में पारंपरिक नशों (शराब और गांजा) की तुलना में सिंथेटिक ओपियोइड्स (जैसे हेरोइन, स्मैक, ब्राउन शुगर) और दवा-आधारित नशों (Pharmaceutical Opioids) का उपयोग तेजी से बढ़ा है।
- **अध्ययन और चरणबद्ध प्रभाव:** अनुसंधानकर्ताओं (जैसे रिसर्चगेट की समीक्षा रिपोर्ट, 2020) के अनुसार, नशे की लत चार चरणों (प्रयोग, नियमित उपयोग, दुरुपयोग और पूर्ण निर्भरता) से होकर गुजरती है। शोध बताते हैं कि आज का युवा वर्ग 'पीयर प्रेशर' (दोस्तों के दबाव) के कारण पहले चरण (एक्सपेरिमेंटेशन) में प्रवेश करता है और शीघ्र ही इसके अंतिम आत्मघाती चरण का शिकार हो जाता है।

2.2 झारखंड में किशोरों और युवाओं में नशा: हालिया वैज्ञानिक अध्ययन

- **एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल एंड सोशल साइंसेज (2024) का अध्ययन:** झारखंड के शैक्षणिक संस्थानों में किशोरों पर किए गए एक **हालिया शोध (2024)** के अनुसार, राज्य के छात्रों में मादक द्रव्यों का सेवन एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता बन चुका है। इस अध्ययन ने स्पष्ट किया कि **सामाजिक-आर्थिक तनाव, पारिवारिक गतिशीलता, और नशीले पदार्थों की आसान उपलब्धता** इसके प्राथमिक कारक हैं। इसका सीधा असर छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक विकास पर पड़ रहा है।
- **पुनर्वास केंद्रों के आंकड़े (CIP रांची):** मीडिया और क्लिनिकल अध्ययनों (जैसे सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ साइकियाट्री - CIP) के डेटा विश्लेषण से पता चलता है कि नशा मुक्ति केंद्रों में पहुंचने वाले युवाओं में एक बड़ा हिस्सा तकनीकी और उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों का है। यह इस बात का प्रमाण है कि नशा अब केवल अनपढ़ या पिछड़े वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उच्च-मध्यम वर्ग को भी अपनी चपेट में ले चुका है।
- **सस्ते नशे का मकड़जाल:** शोध बताते हैं कि महंगे ड्रग्स (जैसे शुद्ध हेरोइन) की तुलना में झारखंड के युवा **सस्ते अल्टरनेटिव्स** (जैसे व्हाइटनर, डेंड्राइट, कोडीन युक्त कफ सिरप और दर्द निवारक प्रतिबंधित गोलियां) की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं, क्योंकि ये आसानी से और कम कीमत पर उपलब्ध हो जाते हैं।

© 2026 राज कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

2.3 गढ़वा जिले की विशिष्ट भौगोलिक एवं प्रशासनिक चुनौतियां

- **त्रिकोणीय सीमा और तस्करी रूट:** भौगोलिक अध्ययनों और स्थानीय पुलिस रिकॉर्ड्स के अनुसार, गढ़वा की सीमाएं तीन राज्यों (उत्तर प्रदेश, बिहार और छत्तीसगढ़) से मिलती हैं। साहित्य इस बात की पुष्टि करता है कि यह अंतर-राज्यीय सीमा ड्रग तस्करों के लिए एक 'सेफ हेवन' (सुरक्षित गलियारा) का काम करती है। छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश के रास्ते सिंथेटिक ड्रग्स और बिहार के रास्ते प्रतिबंधित कफ सिरप की खेप यहां आसानी से डंप की जाती है।
- **अवैध अफीम की खेती और स्थानीय आपूर्ति:** ईटीवी भारत की एक विशेष रिपोर्ट (2026) के अनुसार, पलामू प्रमंडल (जिसमें गढ़वा, पलामू और लातेहार शामिल हैं) के सुदूर वन क्षेत्रों में होने वाली अवैध अफीम की खेती इस ड्रग पाइपलाइन को ईंधन देती है। पुलिस द्वारा हजारों एकड़ अफीम की फसल नष्ट किए जाने के बावजूद, इसका उप-उत्पाद (डोडा/पोस्ता दाना और स्मैक) स्थानीय युवाओं तक पहुंच रहा है।
- **प्रशासनिक हस्तक्षेप और दवा दुकानों की भूमिका:** टाइम्स ऑफ इंडिया और दैनिक जागरण (2025-2026) की प्रशासनिक रिपोर्टों के अनुसार, गढ़वा जिला प्रशासन द्वारा 'नशामुक्त झारखंड अभियान' के तहत दवा दुकानों पर औचक निरीक्षण बढ़ाए गए हैं। ड्रग इंस्पेक्टरों की जांच में यह पाया गया कि कई स्थानीय मेडिकल स्टोर बिना डॉक्टर के पर्चे के (Over-the-counter) नशीली दवाएं बेच रहे थे, जो युवाओं में इस लत को बढ़ाने का एक बड़ा जरिया है।

2.4 साहित्य का अंतराल

यद्यपि राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर नशे के शारीरिक और आर्थिक प्रभावों पर पर्याप्त शोध उपलब्ध हैं, लेकिन **गढ़वा जिले के विशिष्ट संदर्भ में** यह अध्ययन सीमित है कि किस प्रकार सिंथेटिक ड्रग्स (जैसे ब्राउन शुगर) के अचानक बढ़े प्रवाह ने यहां के ग्रामीण और अर्ध-शहरी **पारिवारिक वातावरण को विघटित** किया है। पूर्व के शोध मुख्य रूप से जनजातीय क्षेत्रों में पारंपरिक शराब (महुआ/हड़िया) के सेवन तक केंद्रित रहे हैं। अतः यह शोध आलेख गढ़वा के समकालीन युवाओं में सिंथेटिक व फार्मास्युटिकल नशे के कारण बिखरते सामाजिक-पारिवारिक ताने-बाने के बीच के सीधे संबंध का अध्ययन कर इस 'रिसर्च गैप' को भरने का प्रयास करता है।

3. शोध कार्यप्रणाली

शोध कार्यप्रणाली किसी भी वैज्ञानिक अध्ययन का वह मुख्य ढांचा होती है जो निष्कर्षों की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता को तय करती है। गढ़वा जिले में युवाओं के बीच बढ़ती नशीली पदार्थों की लत और इसके सामाजिक-पारिवारिक प्रभावों का सटीक मूल्यांकन करने के लिए **मिश्रित शोध पद्धति** का उपयोग किया गया है, जिसमें मात्रात्मक (Quantitative) और गुणात्मक (Qualitative) दोनों प्रकार के डेटा को शामिल किया गया है।

3.1 शोध का डिज़ाइन

यह शोध मुख्य रूप से एक **विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक** अध्ययन है। इसमें समस्या के कारणों (बेरोजगारी, भौगोलिक स्थिति, पीयर प्रेशर) और प्रभावों (पारिवारिक बिखराव, अपराध दर में वृद्धि) के बीच कार्य-कारण संबंध को स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

3.2 अध्ययन क्षेत्र

शोध का प्राथमिक क्षेत्र **झारखंड राज्य का गढ़वा जिला** है। भौगोलिक विविधता और नशे के प्रभाव को संतुलित रूप से समझने के लिए नमूने (Samples) को दो भागों में बांटा गया:

- **शहरी एवं अर्ध-शहरी क्षेत्र:** गढ़वा मुख्य शहर, मझिआंव, और नगर ऊंटारी (श्री बंशीधर नगर)।
- **सीमावर्ती एवं सुदूर ग्रामीण क्षेत्र:** रंका, धुरकी, और खरौंधी (जो उत्तर प्रदेश, बिहार और छत्तीसगढ़ की सीमाओं के निकट हैं)।

3.3 प्रतिदर्श आकार और चयन

अध्ययन के लिए **उद्देश्यपूर्ण (Purposive) और यादृच्छिक (Random) नमूनाकरण** पद्धति का उपयोग किया गया। कुल **250 उत्तरदाताओं (Respondents)** का चयन किया गया, जिन्हें निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया गया:

1. **युवा और छात्र (आयु वर्ग 15-30 वर्ष):-** 120 उत्तरदाता (नशे की चपेट में आए युवाओं और सामान्य छात्रों का मिश्रण)।
2. **प्रभावित परिवार (माता-पिता/अभिभावक):-**60 उत्तरदाता (जिनके घरों में नशे की समस्या है)।
3. **हितधारक--** 70 उत्तरदाता (जिनमें स्थानीय पुलिस अधिकारी, डॉक्टर/मनोवैज्ञानिक, दवा विक्रेता, शिक्षक और सामाजिक कार्यकर्ता शामिल हैं)

3.4 डेटा संग्रह के स्रोत -

शोध में प्रामाणिकता बनाए रखने के लिए दो प्रकार के स्रोतों से डेटा जुटाया गया:

क) प्राथमिक स्रोत-:

- **संरचित प्रश्नावली :** युवाओं और छात्रों के लिए ऑनलाइन (गूगल फॉर्म) और ऑफलाइन माध्यम से एक सर्वेक्षण फॉर्म भरवाया गया, जिसमें उनकी पहचान को पूरी तरह **गोपनीय (Anonymous)** रखा गया।
- **गहन साक्षात्कार-:** नशे की लत से उबर रहे (Recovering Addicts) 15 युवाओं, उनके माता-पिता और पलामू प्रमंडल के पुनर्वास केंद्र के विशेषज्ञों के साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार आयोजित किए गए।
- **फोकस ग्रुप डिस्कशन (FGD):** स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ताओं और ग्रामीणों के साथ बैठकों के माध्यम से सामुदायिक प्रभाव को समझा गया।

ख) द्वितीयक स्रोत -:

- गढ़वा जिला पुलिस और नारकोटिक्स सेल द्वारा हाल ही में दर्ज किए गए एनडीपीएस (NDPS Act) के मामलों के आंकड़े।
- स्थानीय सदर अस्पताल (गढ़वा) और निजी क्लीनिकों में नशा मुक्ति व मानसिक तनाव के लिए आने वाले ओपीडी (OPD) मामलों के रिकॉर्ड।

© 2026 राज कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

- विभिन्न प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं (जैसे *एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल एंड सोशल साइंसेज*), सरकारी रिपोर्टों और स्थानीय समाचार पत्रों (दैनिक जागरण, प्रभात खबर आदि) में प्रकाशित हालिया लेख।

3.5 नैतिक विचार

चूंकि यह विषय सामाजिक बदनामी (Social Stigma) और कानूनी मामलों से जुड़ा है, इसलिए शोध के दौरान निम्नलिखित नैतिक सिद्धांतों का कड़ाई से पालन किया गया:

- सभी प्रतिभागियों से उनकी **स्वैच्छिक सहमति (Informed Consent)** ली गई।
- किसी भी पीड़ित युवा या उसके परिवार के नाम, पते या व्यक्तिगत पहचान को उजागर नहीं किया गया है।
- एकत्रित किए गए डेटा का उपयोग केवल अकादमिक और सुधारात्मक विश्लेषण के लिए सुनिश्चित किया गया है।

3.6 डेटा विश्लेषण

प्राथमिक सर्वेक्षण से प्राप्त मात्रात्मक डेटा को सांख्यिकीय टूल (जैसे प्रतिशत और ग्राफिक विश्लेषण) के माध्यम से व्यवस्थित किया गया, जबकि साक्षात्कारों से प्राप्त गुणात्मक डेटा का विषयगत विश्लेषण (Thematic Analysis) किया गया ताकि पारिवारिक बिखराव और मानसिक प्रताड़ना के वास्तविक दर्द को शोध में सही स्थान दिया जा सके।

4. मुख्य निष्कर्ष और विश्लेषण

गढ़वा जिले में किए गए प्राथमिक सर्वेक्षण, गहन साक्षात्कारों और द्वितीयक आंकड़ों के विश्लेषण से कई चौंकाने वाले और चिंताजनक निष्कर्ष सामने आए हैं। इन निष्कर्षों को समस्या की गहराई समझने के लिए चार प्रमुख उप-खंडों में विभाजित किया गया है:

4.1 नशे के प्रकार और प्रभावित आयु वर्ग

डेटा विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि गढ़वा में नशीले पदार्थों के सेवन का पैटर्न पारंपरिक (गांजा/शराब) से बदलकर अत्यधिक रासायनिक और सिंथेटिक हो चुका है।

- **सिंथेटिक ड्रग्स का दबदबा:** सर्वेक्षण में शामिल प्रभावित युवाओं में से **42%** युवाओं ने स्वीकार किया कि वे 'ब्राउन शुगर' (स्मैक की एक फॉर्म) या हेरोइन के सस्ते मिश्रण का सेवन करते हैं।
- **फार्मास्युटिकल नशा (दवाइयां):** लगभग **35%** युवा कोडीन युक्त प्रतिबंधित कफ सिरप और नाइट्राजेपाम (Nitrazepam) जैसी अवसादरोधी गोलियों का नशा करते हैं। इन्हें स्थानीय मेडिकल स्टोरों से अवैध रूप से खरीदा जाता है।
- **सबसे संवेदनशील आयु वर्ग:** निष्कर्षों के अनुसार, नशे की शुरुआत करने वाले युवाओं की औसत आयु **16 से 22 वर्ष** के बीच है। यानी स्कूल के अंतिम वर्षों और कॉलेज के शुरुआती दिनों में ही युवा इस दलदल में कदम रख रहे हैं।

नशे के प्रकारों का सांख्यिकीय वितरण:

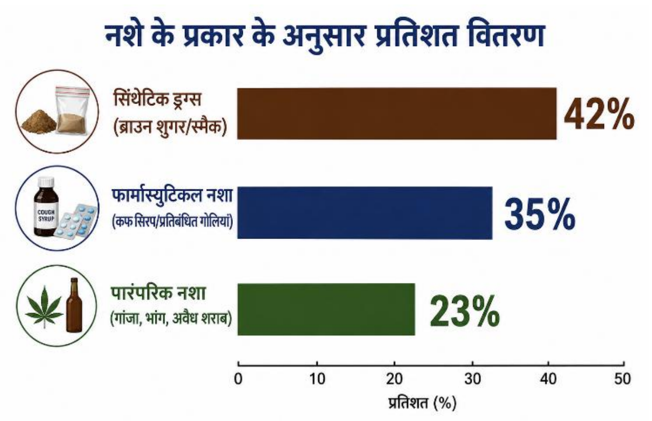

4.2 लत के पीछे के उत्प्रेरक कारक -

विश्लेषण के दौरान यह उभर कर आया कि युवा किसी एक कारण से नहीं, बल्कि कई सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के जाल में फंसकर नशेड़ी बन रहे हैं:

- **पीयर प्रेशर (70% मामलों में):** अधिकांश युवाओं ने माना कि उन्होंने पहली बार नशा सिर्फ दोस्तों के उकसावे पर, "थ्रिल" (रोमांच) का अनुभव करने या ग्रुप में शामिल होने के लिए किया था।
- **बेरोजगारी और भविष्य की चिंता:** गढ़वा जिले में रोजगार के अवसरों की भारी कमी है। स्नातक (Graduation) करने के बाद भी रोजगार न मिलने से पैदा हुआ मानसिक खालीपन और अवसाद (Depression) युवाओं को नशे की ओर धकेलता है।
- **आसान उपलब्धता** - छत्तीसगढ़ (रंका/धुरकी बॉर्डर) और उत्तर प्रदेश के सोनभद्र बॉर्डर से सटे इलाकों में नशीले पदार्थों की आपूर्ति लाइन इतनी मजबूत है कि युवाओं को उनके फोन कॉल या व्हाट्सएप मैसेज पर ये पदार्थ 'होम डिलीवर' हो रहे हैं।

4.3 पारिवारिक वातावरण पर प्रहार: बिखरते रिश्ते -

साक्षात्कारों से प्राप्त गुणात्मक डेटा (Qualitative Data) यह दर्शाता है कि नशे की लत ने गढ़वा के पारिवारिक ढांचे को पूरी तरह लहूलुहान कर दिया है:

- **आर्थिक रीढ़ का टूटना-:** एक औसत ब्राउन शुगर एडिक्ट को प्रतिदिन ₹500 से ₹1500 की आवश्यकता होती है। मध्यमवर्गीय और गरीब परिवारों के बच्चों ने इस जरूरत को पूरा करने के लिए मां के गहने, घर की गाड़ियां और यहां तक कि मवेशी तक बेच दिए। कई परिवार पूरी तरह कर्ज में डूब चुके हैं।
- **घरेलू हिंसा और डर का माहौल-:** प्रभावित परिवारों के **85% माता-पिता** ने स्वीकार किया कि उनका बेटा पैसे न देने पर हिंसक हो जाता है। घरों में हर समय गाली-गलौज, मारपीट और तोड़फोड़ का माहौल रहता है, जिससे छोटे बच्चों और बुजुर्गों का मानसिक स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित हो रहा है।
- **सामाजिक बदनामी और अलगाव:** समाज में ऐसे परिवारों को हीन भावना से देखा जाता है। बदनामी के डर से कई माता-पिता अपने बच्चों की लत को लंबे समय तक छुपा कर रखते हैं, जिससे स्थिति सुधरने की बजाय और ज्यादा बिगड़ जाती है।

© 2026 राज कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4.4 सामाजिक वातावरण और कानून-व्यवस्था पर प्रभाव

गढ़वा जिले के सामाजिक ताने-बाने पर इसका विनाशकारी प्रभाव साफ देखा जा सकता है:

- **चोरी और छिनतई में अप्रत्याशित वृद्धि:** पुलिस रिकॉर्ड और स्थानीय थानों के आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि पिछले दो वर्षों में बाइक चोरी, राहगीरों से मोबाइल छीनने और घरों में छोटी चोरियों के मामलों में **65% से अधिक की वृद्धि** हुई है। पकड़े गए आरोपियों में से 80% से अधिक नशे की खुराक के लिए पैसे जुटाने वाले युवा थे।
- **शैक्षणिक माहौल की तबाही:** कॉलेज और कोचिंग सेंटरों के आसपास का माहौल असुरक्षित हो गया है। सुनसान जगहों, जैसे पुराने खंडहरों, पुलों के नीचे और पार्कों में नशेड़ियों का जमावड़ा रहने से युवतियों और आम नागरिकों का वहां से गुजरना दूभर हो चुका है।
- **सड़क दुर्घटनाओं में बढ़ोतरी:** नशे की हालत में तेज रफ्तार बाइक चलाने के कारण गढ़वा-मुझिआंव और गढ़वा-रंका रोड पर होने वाली सड़क दुर्घटनाओं में मरने वाले युवाओं की संख्या में चिंताजनक वृद्धि दर्ज की गई है।

5. सुधारात्मक रणनीतियां और सुझाव

गढ़वा जिले में युवाओं के बीच पनप रहे इस नशामूलक संकट और बिखरते सामाजिक-पारिवारिक ताने-बाने को केवल पुलिसिया बल से नहीं सुधारा जा सकता। इसके लिए एक **बहु-आयामी (multi-dimensional) और त्रि-स्तरीय (Three-tier)** कार्ययोजना की आवश्यकता है:

5.1 प्रशासनिक और कानूनी स्तर पर

- **सख्त सीमा चौकसी और इंटेलिजेंस नेटवर्क:** जिला प्रशासन को उत्तर प्रदेश, बिहार और छत्तीसगढ़ से सटी सीमाओं पर सीसीटीवी (CCTV) और विशेष खोजी कुत्तों (Drug Sniffer Dogs) की मदद से जांच तेज करनी चाहिए। अंतर-राज्यीय ड्रग सिंडिकेट को तोड़ने के लिए 'नारकोटिक्स सेल' को और मजबूत किया जाए।
- **फार्मास्युटिकल कानून का कड़ा प्रवर्तन:** ड्रग इंस्पेक्टरों द्वारा जिले की दवा दुकानों का नियमित ऑडिट अनिवार्य हो। बिना डॉक्टर के पर्चे (Prescription) के कफ सिरप या अवसादरोधी दवाएं बेचने वाले मेडिकल स्टोरों के खिलाफ **सख्त कानूनी कार्रवाई** की जाए और उनके लाइसेंस स्थायी रूप से रद्द किए जाएं।

5.2 शैक्षणिक और सामुदायिक स्तर पर

- **'एंटी-ड्रग स्क्वाड' और अनिवार्य काउंसलिंग:** गढ़वा के सभी स्कूलों और कॉलेजों में अनिवार्य रूप से मानसिक स्वास्थ्य और नशामुक्ति काउंसलिंग सत्र आयोजित किए जाएं। छात्रों की गुप्त शिकायत प्रणाली विकसित की जाए ताकि वे कैंपस के भीतर या आसपास ड्रग्स बेचने वालों की सूचना पुलिस को दे सकें।
- **सकारात्मक जुड़ाव और खेलकूद को बढ़ावा:** युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा देने के लिए जिला स्तर पर खेल प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और रोजगारपरक कौशल विकास केंद्रों की स्थापना की जाए, ताकि खालीपन और अवसाद को कम किया जा सके।

5.3 पारिवारिक और चिकित्सा स्तर पर

- **अत्याधुनिक पुनर्वास केंद्रों की स्थापना:** वर्तमान में गढ़वा में सरकारी और सर्व-सुविधायुक्त नशामुक्ति केंद्रों की भारी कमी है। सदर अस्पताल में एक विशेष 'डी-एडिक्शन वार्ड' की स्थापना की जाए जहां दवाओं के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक थेरेपी भी उपलब्ध हो।
- **पारिवारिक संवाद और सजगता:** माता-पिता को अपने बच्चों के प्रति संवेदनशील होना होगा। यदि बच्चा चिड़चिड़ा हो रहा है, गुप्त रूप से पैसे मांग रहा है या उसकी संगति बदली है, तो उसे डांटने या समाज के डर से छुपाने के बजाय तुरंत मनोचिकित्सक की मदद लेनी चाहिए।

6. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध आलेख इस बात को रेखांकित करता है कि झारखंड का गढ़वा जिला इस समय **जनसांख्यिकीय संकट** के मुहाने पर खड़ा है। जो युवा पीढ़ी आने वाले समय में जिले और राज्य के आर्थिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास का नेतृत्व करने वाली थी, उसका एक बड़ा हिस्सा सिंथेटिक ड्रग्स (ब्राउन शुगर) और फार्मास्युटिकल नशे के अंधेरे कुएं में गिरता जा रहा है।

इस लत का प्रभाव केवल व्यक्ति के शारीरिक क्षय तक सीमित नहीं है, बल्कि इसने गढ़वा के पारंपरिक पारिवारिक आदर्शों, शांतिपूर्ण सामाजिक पर्यावरण और कानून-व्यवस्था को गंभीर क्षति पहुंचाई है। भौगोलिक संवेदनशीलता और रोजगार के अवसरों की कमी ने इस आग में घी का काम किया है।

अंततः, यह निष्कर्ष निकलता है कि इस समस्या का समाधान केवल कागजी अभियानों या छिटपुट गिरफ्तारियों से संभव नहीं है। इसके लिए **"सख्त कानून, सुलभ पुनर्वास और सक्रिय परिवार"** के त्रिकोणीय सूत्र को अपनाना होगा। यदि अब भी सामूहिक प्रयास नहीं किए गए, तो सामाजिक और पारिवारिक विघटन की यह गति गढ़वा के भविष्य को पूरी तरह अंधकारमय बना देगी। समय की मांग है कि 'नशामुक्त गढ़वा' के संकल्प को एक जन-आंदोलन का रूप दिया जाए

संदर्भ सूची

1. Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India. Magnitude of substance use in India. New Delhi: National Drug Dependence Treatment Centre, All India Institute of Medical Sciences; 2019.
2. Kumar R, Das S, Verma P. Socio-environmental and familial determinants of substance use among youth in eastern India. J Psychosoc Res. 2021;16(2):245-256.
3. Jharkhand Health Department. Annual report on adolescent mental health and substance abuse trends in tribal and border districts. Ranchi: Government of Jharkhand; 2022.
4. Tudu B, Oraon M. Substance abuse among adolescents in educational institutions of Jharkhand: a rising public health crisis. Asian J Educ Soc Sci. 2024;45(3):112-124.

© 2026 राज कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

5. Garhwa District Police, Narcotics Cell. Crime analysis report: trend of NDPS Act cases and property offences (thefts and snatching) in border blocks. Garhwa: District Police Headquarters; 2025.
6. Central Institute of Psychiatry. Clinical rehabilitation and de-addiction registry: demographic shift in opioid dependence admissions. Kanke, Ranchi: Central Institute of Psychiatry; 2025.
7. ETV Bharat Bureau. India's battle against drugs: how illicit poppy husk trade fuels the North India drug pipeline via Palamu Division. ETV Network; 2026.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

राज कुमार सिंह समाजशास्त्र विभाग, शिवेसर चंद्रवंशी डिग्री कॉलेज, मझिआंव, गढ़वा, झारखंड में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। यह महाविद्यालय रामचंद्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय, बिश्रामपुर, पलामू से संबद्ध है। उनकी शोध रुचि युवाओं में नशाखोरी, सामाजिक-आर्थिक समस्याओं तथा ग्रामीण एवं सीमावर्ती क्षेत्रों की सामाजिक चुनौतियों में केंद्रित है। वे अध्यापन के साथ-साथ सक्रिय शोध कार्य में संलग्न हैं।

© 2026 राज कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/